Study Material For B.A. II

Sub: Sanskrit, Paper- III

Dr. Savitri Singh
Associate Professor,
Deptt. of Sanskrit
R.M.C. SASARAM

Date 06.06.2020

Paper: 3rd

Topic: शुकनासोपदेश के आधार पर ~~प्रतीत~~ लक्ष्मी के स्वभाव का (विशेषता) वर्णन

अतिप्रयत्नविधृतापि परमेश्वरगृहेषु विविधगन्धगजगण्ड-मधुपानमत्तेव परिस्खलति। पारुष्यमिवोपशिक्षितुमसिधारासु निवसति।

बड़े-बड़े धनादयों के घरों में अति प्रयत्न से रखी गई यह लक्ष्मी मानों अनेक मदगजों के गण्डस्थल पर बहने वाले मद जल को पीने से मतवाली बनी हुई लड़खड़ाती सी रहती है। क्रूरता की शिक्षा देने के लिए मानों तलवारों की धार पर निवास करती है।

विश्वरूपत्वमिव ग्रहीतुमाश्रिता नारायणमूर्तिम्। अप्रत्ययबहुला च दिवसान्तकमलमिव समुपचितमूलदण्ड-कोशमण्डलमपि मुञ्चति भूभुजम्।

विविधरूप वाली होने के कारण ही तो यह लक्ष्मी पुरुष नारायण को प्राप्त हुई है। विश्वासहीना यह जिस प्रकार सन्ध्याकाल में बढ़े हुए मूलदण्डकोशमण्डल वाले कमल अर्थात अपने निवास स्थान को छोड़ देती है। उसी प्रकार बढ़े हुए मित्र-कर-भाण्डागार तथा साम्राज्य वाले राजा को भी छोड़ देती है।

→

लतेव विटपकमध्यारोहति। गंगेव वसुजनन्यपि तरंग-बुद्बुदचञ्चला।

यह जैसे लता वृक्ष पर आरोहण करती है उसी प्रकार यह भी नीच पुरुषों का आलिंगन करती है। वसु जननी होकर भी ~~जिस~~ गंगा जिस प्रकार तरंगों और बुदबुदों से चंचल है उसी प्रकार यह भी चंचल है।

"दिवसकरगतिरिव प्रकटितविविधसंक्रान्तिः। पाताल-गुहेव तमोबहुला।"

सूर्य की गति के समान यह लक्ष्मी विभिन्न राशियों के समान पुरुषों में संक्रमण करती- छलांग लगाती है तथा पाताल-कन्दरा के समान अन्धकार अथवा तमोगुण से पूर्ण है।

हिडिम्बेव भीमसाहसैकहार्यहृदया। प्रावृडिवाचिर-द्युतिकारिणी। दुष्टपिशाचीव दर्शितानेकपुरुषोच्छ्राया स्वल्पसत्वमुन्मत्तीकरोति।

यह लक्ष्मी भीम के साहस मात्र पर मुग्ध हो जाने वाली हिडिम्बा के समान है। वर्षाकाल में जिस प्रकार बिजली क्षणमात्र कौंधकर गायब हो जाती है उसी प्रकार लक्ष्मी भी थोड़ी देर को अपनी चमक दिखा जाती है। इसके अतिरिक्त जिस प्रकार पिशाचिनी अनेक पुरुषों की ऊँचाई दिखाकर अल्प बुद्धि वाले पुरुष को उन्मत्त बना देती है। उसी प्रकार यह लक्ष्मी भी अनेक पुरुषों की श्रेष्ठता दिखलाकर मंद बुद्धि वाले पुरुषों को पागल बना देती है।

शेष अगले दिन →